Chola Temple architecture with special reference to the Brihadeshwara Temple of Tanjore

चोल मंदिर स्थापत्य : तंजोर के बृहदेश्वर मंदिर के विशेष संदर्भ में

Navin **Kumar**
Professor
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005

P.G. / M.A. IInd Semester,

Dept. of A.I.H.& Archaeology. Patna University

Paper- C.C.-9, ANCIENT INDIAN ART, ARCHITECTURE AND ICONOGRAPHY

चोल वंश का दक्षिण भारत पर बहुत दिनों तक शासन रहा। ये 10वीं एवं 11वीं शताब्दियों में अत्यन्त शक्तिशाली थे, परन्तु 12वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक उनका पतन होने लगा। इस वंश के कुछ नेरश सफल विजेता थे तथा साथ ही साथ निर्माता भी थे। उन्होंने अपनी विजयों से जो अटूट वैभव प्राप्त किया उसे भव्य मंदिरों के निर्माण में अर्पित कर दिया। इन मंदिरों की अपनी विशेषता है और यह दक्षिण भारतीय मंदिर स्थापत्य में अपना विशेष स्थान रखते हैं। चोल मंदिरों को दो वर्गों में रखा जाता हैः प्रारंभिक तथा उत्तर कालीन।

प्रारंभिक चोल मंदिरों पर पल्लव वास्तुकला का विशेष प्रभाव है। चोल कलाकारों ने पल्लव शैली को कुछ परिवर्तनों के साथ अपनाया। जैसे दीवारों को अलंकरण के लिए प्रयुक्त ताखों की आकृति चोल–शैली में संकीर्ण है जबकि पल्लव–शैली के ताखे विस्तृत हैं। दूसरा परिवर्तन वाह्य अलंकरण में प्रयुक्त 'कुडु' (बौद्व मेहराबनुमा आकृति) की आकृति में है। जबकि पल्लव शैली में इस 'कुडु' के शीर्ष भाग में फावड़े की आकृति बनी है, चोल शैली में सिंहमूर्ति दिखाई पड़ती है। तीसरी बात यह उल्लेखनीय है कि चोल मंदिरों

में प्रयुक्त स्तंभ, स्तंभशीर्ष तथा दीवारगीर भी पल्लव शैली से भिन्न है तथा उनकी अपनी विशेषताएं है। चोल मंदिरों में बने द्वारपाल पल्लव मंदिरों की तरह दो हाथ वाले हैं।

प्रारंभिक चोल मंदिरों में नर्तमलई का विजयालय मंदिर, कोदुबेलुर का मुवकोइल–मंदिर, कुंभकोणम् का मंदिर तथा कोरंगनाथ मंदिर उल्लेखनीय है।

उत्तरकालीन चोल मंदिरों पर चालुक्य शैली का स्पष्ट प्रभाव दिखता है। चालुक्य मंदिरों के शिखर की तरह उत्तरकालीन चोल मंदिरों के शिखर गुंबजदार है। शिखरों की वाह्य आकृति में बादामी तथा पत्तदकल के मंदिरों के सदृश्य दोहरी झुकावट है। ये मंदिर विस्तृत प्रांगण के मध्य निर्मित है। इसके प्रदक्षिणापथ, परिशिष्ट कक्ष, प्राचीर तथा गोपुर द्वार सभी विशाल है तथा द्वारपाल चतुर्भुजी है।

उत्तरकालीन चोल मंदिर में तंजोर के बृहदेश्वर मंदिर तथा गंगैकोण्ड चोलपुरम् के बृहदेश्वर मंदिर की गणना की जा सकती है। यहॉ यह उल्लेखनीय है कि चोल नरेशों ने अधिकांश शैव मंदिर ही बनवाये चूकिं वे स्वयं शैवमतावलम्बी थे। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि इस काल में अन्य धर्मों से संबंधित मंदिर निर्मित ही नहीं किये गये।

चोल मंदिरों में तंजोर का बृहदेश्वर मंदिर अपना विशेष स्थान रखता है, जिसका कारण है उसकी दिव्य शोभा एवं शालीनता। यह मंदिर चेन्नई से लगभग दो सौ मील दक्षिण–पश्चिम तंजोर नामक स्थान में स्थित है। इस शिव मंदिर का निर्माण राजराज प्रथम ने लगभग 1000 ई0 में करवाया था।

तंजोर का वृहदेश्वर मंदिर चाहर दीवारी से घिरे एक प्रांगण में निर्मित है। इस प्रांगण की लम्बाई 500 फुट और चौड़ाई 250 फुट है। इस आयताकार प्रांगण के आगे एक वर्गाकार प्रांगण भी है जिसकी प्रत्येक भुजा

250 फुट की है। मुख्य प्रांगण में जो आयताकार मंदिर खड़ा है, इसमें गर्भगृह, स्तंभयुक्त मंडप, नंदी मंडप तथा एक विशाल सभाकक्ष है जो एक ही धूरी पर निर्मित है। मंदिर में प्रवेश के लिए दो गोपुरम हैं। इस मंदिर के गर्भगृह के चारों ओर 9 फुट चौड़ा मार्ग है जो संभवतः प्रदक्षिणा पथ का कार्य करता होगा। जहॉ तक बाहरी वर्गाकार प्रांगण का प्रश्न है संभवतः लघु देवालय आदि के निर्माण के लिए प्रयोग में लाया जाता था।

यह मंदिर आग्नेय प्रस्तर से निर्मित हुआ है। मुख्य मंदिर का फैलाव 180 फुट की लम्बाई में है। सबसे विलक्षण इस मंदिर का शिखर अथवा विमान है जो पिरामिडनुमा है और गर्भगृह के उपर स्थित है। इसकी लम्बाई 190 फुट है जबकि भुवनेश्वर के लिंगराज मंदिर का शिखर केवल 160 फुट उॅचा है। यह मंदिर के पश्चिमी छोर पर स्थित है। विमान एक ठोस वर्गाकार आधार पर आधारित है। इसकी एक भुजा की लम्बाई 99 फुट है। गर्भगृह की दीवार लगभग 50 फुट की उचाई तक सीधी खड़ी है। सामान्यतया शिखर की उॅचाई 60 फुट से अधिक नहीं होती परन्तु तंजोर के वृहदेश्वर मंदिर की उॅचाई अपने में अकेला है। सम्पूर्ण शिखर को तीन भागों में नियोजित किया गया है : आधार भाग, ढालुआ भाग तथा श्रृंग अथवा अंडाकार स्तूपिका।

आधार भाग दो मंजिलों में विभक्त दिखता है जिसका कारण है विशाल वक्र कार्निस। द्वितीय मंजिल का अंत भी एक लटके हुए कार्निस से होता है। निचले हिस्से में अनेक 'कूडु' है जिनमें उभरी हुई मूर्तियां है। उपरी हिस्से में भी अनेक ताखे बने हैं जिसमें मूर्तियॉ है।

गर्भगृह की उत्तरी, पश्चिमी तथा दक्षिणी दीवारों पर शिव की विशालकाय मूर्तियों का अलंकरण है। गर्भगृह के प्रदक्षिणा पथ में प्रकाश का सर्वथा अभाव है किन्तु शिल्पियों ने इस स्थान को भी सुन्दर मूर्तियों से

अलंकृत कर दिखाया है। गर्भगृह के भीतर एक विशाल शिवलिंग प्रतिष्ठित है। इतना विशाल शिवलिंग तमिलनाडु तो क्या सम्पूर्ण भारत में कहीं नहीं मिलता।

पिरामिड शिखर का ढालुआ भाग तेरह परतों में नियोजित है। ये परतें जैसे जैसे उपर की ओर उठती है वैसे वैसे इनकी चौड़ाई कम होती जाती है। इस प्रकार सबसे उपर के परत की चौड़ाई सबसे नीचे के परत की चौड़ाई से एक तिहाई रह जाती है। इस ढालुवे भाग में आड़ी और खड़ी रेखाओं का अलंकरण है।

शिखर के शीर्ष भाग की बनावट भी विशिष्ट है। यह अंडाकार स्तूपिका है। जिस प्रकार बौद्व स्तूप की आकृति होती है वैसी ही शीर्ष भाग की आकृति है। अन्दर की ओर झुकावट के कारण यह विशेष आकर्षक दिखता है। शिखर का सम्पूर्ण सतह आकर्षक दिखता है। शिखर की सम्पूर्ण सतह में भव्य अलंकरण है। शिखर के शीर्ष एवं आधार भाग में अर्द्वस्तंभों की कतारे है। स्थान–स्थान पर प्रकाश के लिए छिद्र बने हैं अथवा खिड़कियॉ बनी है, जिससे मंदिर की सुन्दरता काफी बढ़ती है।

वृहदेश्वर मंदिर की अलंकृत मूर्तियॉ कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मंदिर के चबूतरे में तीन ओर–उत्तर, पश्चिम तथा दक्षिण में, ताखों की दो पंक्तियॉ, जिनमें विभिन्न देवी देवताओं की मूतियॉ उत्कीर्ण हैं। मंदिर की भीतरी दीवारों पर नृत्य की 108 भंगिमाओं में नटराज की मूर्तियॉ अंकित है स्वयं राजराज प्रथम और इनकी लोकमहादेवी की मूर्तियॉ भी है।

यह मंदिर चोलनरेशों की कलात्मक अभिरूचि का ज्वलंत प्रमाण है। पर्सी ब्राउन के शब्दों में ''यदि चोलकालीन अन्य अवशेष न भी होते, तो भी यह मंदिर अकेले ही उनकी कलात्मक अभिरूचि का परिचय देने के लिए

पर्याप्त है। यह चोल मंदिरों में एक रत्न की तरह सुशोभित है। इस मंदिर की सुन्दरता को देखने से यह प्रमाणित होता है कि इस मंदिर का निर्माण अत्यन्त निपुण शिल्पियों के हाथों हुआ होगा।